जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

दुष्ट मनुष्य के सामने सज्जनता कीचड़ में दूध डालने के समान है।

- सूक्तिसंग्रह, पृष्ठ-18

वर्ष : 25, अंक: 2 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (द्वितीय) 2002 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. अनुभवप्रकाश जैन एवं पं. संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

सिद्धचक्र मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

(1) दिल्ली : यहाँ आत्मार्थी ट्रस्ट द्वारा संचालित आत्मसाधना केन्द्र में प.पू.108 आचार्य धर्मभूषणजी महाराज एवं उनके शिष्य प.पू. 108 श्री सम्यक्त्वभूषणजी महाराज व प.पू. 108 श्री नियमसागरजी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 20 मार्च से 28 मार्च 2002 तक श्री विमलकुमारजी जैन नीरू केमीकल्स नई दिल्ली द्वारा श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन कराया गया।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के सुबह-शाम समयसार का सार विषय पर मार्मिक प्रवचन हुए।

इसके अतिरिक्त पण्डित प्रकाशचंदजी हितैषी दिल्ली, पण्डित बाबूलालजी दिल्ली, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी के सारगर्भित प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री सनावद के एवं पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया जयपुर के निर्देशन में पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित राकेशजी दोशी बाँसवाड़ा आदि ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर 11350 रुपये के कैसेट्स एवं 30,000 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा।

(2) कोलकाता : यहाँ नवनिर्माणाधीन श्री सीमंधर महावीरस्वामी दिगम्बर जैन मंदिर पद्मोपुकुर रोड, भवानीपुर कोलकाता में दिनांक 30 मार्च से 6 अप्रैल 2002 तक श्री राजमलजी पाटनी परिवार कोलकाता द्वारा श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन कराया गया।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के प्रात: क्रमबद्धपर्याय एवं सायंकाल समयसार का सार विषय पर अत्यंत सरल-सुबोध शैली में हृदयग्राही प्रवचन हुए।

ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल के प्रात:कालीन प्रवचनों का ए.टी.एन. वर्ल्ड एवं आस्था चैनल वालों द्वारा वीडीयो फिल्मांकन किया गया, जो ए.टी.एन. वर्ल्ड चैनल में 2 अप्रैल से 17 अप्रैल तक प्रसारित किये जा रहे हैं। इसके साथ ही भगवान महावीरस्वामी के 2600वें जन्ममहोत्सव वर्ष के पावन उपलक्ष में ए.टी.एन.वर्ल्ड चैनल की संवाददाता श्रीमती तारा दुगड़ ने डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का **भगवान महावीर की वर्तमान समय में उपयोगिता** विषय पर एक इन्टरव्यू लिया, जिसे 22 अप्रैल 2002 को प्रात: 7.00 से 7.30 बजे तक तथा सायं 8.30 से 9.00 बजे तक तथा 25 अप्रैल 2002 को सायं 8.30 से 9.00 बजे तक ए.टी.एन. वर्ल्ड चैनल पर प्रसारित किया जायेगा।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित राकेशजी शास्त्री बाँसवाड़ा एवं पण्डित उज्ज्वलजी शास्त्री बेलोकर द्वारा सम्पन्न कराये गये।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में श्री भागचंदजी पाटनी, श्री बालचंदजी पाटनी, श्री कीर्तिभाई, श्री हर्षदभाई, श्री सोहनलालजी आदि अनेक महानुभावों का उल्लेखनीय योगदान रहा।

मानस्तम्भ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

कारंजा (महा.) यहाँ 18 मार्च से 21 मार्च 2002 तक मानस्तम्भ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव प.पू. 108 श्री शुभचंद्रसागरजी महाराज तथा प.पू. 105 ऐलक विज्ञानसागरजी महाराज तथा प.पू. 105 क्षुल्लक ज्ञानसागरजी महाराज के सान्निध्य में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर के मार्मिक प्रवचन हुए। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य पण्डित श्री जिनराजजी महाजन कारंजा एवं पण्डित कन्हैयालालजी चवरे तथा सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित मधुकरजी जैन जलगाँव ने सम्पन्न कराये।

श्री सीमंधर संगीत सरिता भजन मंडल छिन्दवाड़ा द्वारा प्रस्तुत आध्यात्मिक तथा पंचकल्याणक पर प्रासंगिक भजनों ने एवं उनके सुमधुर संगीत ने कारंजावासियों को बहुत प्रभावित किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में स्थानीय विद्वान पण्डित श्री धन्यकुमारजी भोरे, पण्डित ब्र. माणिकचंदजी भिसीकर बाहुबली, सुश्री विजयाताई भिसीकर, विदुषी गजाबेन बाहुबली, पण्डित आलोकजी शास्त्री, ब्र. सुजाताजी शास्त्री आदि विद्वानों का भी समाज को सान्निध्य तथा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर भजनों के 400 कैसेट्स की बिक्री हुई तथा 20,000/- रु. का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। सम्पूर्ण कार्यक्रम जे.डी. चवरे विद्यामंदिर कारंजा के भव्य प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

720 तीर्थंकर मण्डल विधान सम्पन्न

अजमेर : यहाँ 21 मार्च से 28 मार्च तक श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट पुरानी मण्डी के तत्त्वावधान में श्री सीमंधर जिनालय में 720 तीर्थंकर मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड के मार्मिक प्रवचन हुए। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल द्वारा सम्पन्न कराये गये।

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन 4

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

तृतीय सर्ग में ही गुणस्थानों के प्रसंग में आठकर्मों का लौकिक उदाहरण से फल दर्शाया है। साथ ही भव्य–अभव्य जीवों की परिभाषा देते हुए संसारी जीवों को दो भागों में बाँटा है। एक भव्य राशि दूसरी अभव्य कालद्रव्य के समान राशि। ये दोनों ही प्रकार की जीवराशियाँ अक्षय अनन्त हैं। ये जीव मिथ्यात्व, अविरति, कषायों और योगों द्वारा मलिन हो रहे हैं, कलुषित हो रहे हैं और अपने–अपने शुभाशुभ परिणामों के फलस्वरूप चार गति – चौरासी लाख योनियों में जन्म–मरण के दु:ख भोग रहे हैं।

यहाँ चार गति के दु:खों का जो दर्दनाक चित्रण है, वह भी विस्तार से वर्णनीय है, इसे पढ़कर भी पाठक संसार के दु:खों से भयभीत होकर मोक्षमार्ग में आ सकते हैं, एतदर्थ इसका चित्रण भी यथास्थान करेंगे।

जब कोई भव्यजीव क्षयोपशम, विशुद्धि, प्रायोग्य, देशना तथा करणलब्धि को प्राप्त करता है, तब वह आत्मविशुद्धि के अनुसार दर्शनमोह का उपशम, क्षयोपशम अथवा क्षय करके तदनुसार सम्यक्त्व भाव को प्राप्त करता है। इसका एवं इस के फल में जो स्वर्ग–मोक्ष को प्राप्त होता है, उसका भी विवेचन है। आवश्यकतानुसार इसकी चर्चा भी अनुशीलन में होगी ही।

चतुर्थ सर्ग में राजा श्रेणिक के द्वारा पिछले सर्ग में पूछे गये 'लोकालोक' के विभाग सम्बन्धी विषय का विस्तृत वर्णन है। इसमें सर्वप्रथम लोक की परिभाषा देते हुए कहा है कि जिसमें कालद्रव्य तथा अपने अवान्तर विस्तार से सहित अन्य समस्त पंचास्तिकाय दिखाई देते हैं, वह लोक कहलाता है। मूल श्लोक इसप्रकार है –

काल: पंचास्तिकायश्च सप्रपंचा इहाखिला।
लोक्यते येन तेनायं लोक इत्यभिलप्यते।।5।।सर्ग4

इस लोक का आकार कमर पर हाथ रखकर तथा पैर फैलाकर अचल खड़े हुए मनुष्य के आकार का है। तीनों लोकों की लम्बाई 14 राजू है। इस चौथे सर्ग में 382 श्लोकों में मात्र अधोलोक का विस्तृत वर्णन है। इसे पढ़कर पाठक को निश्चित ही ऐसा भाव जागृत होता है कि यदि ऐसी दु:खद नरक गति में न जाना हो तो हमें नरक जाने के कारण जो शास्त्रों में बताये हैं, उन पाप भावों से बचना होगा। एतदर्थ सच्चे देव–शास्त्र–गुरु का यथार्थ श्रद्धान, तत्त्वार्थ श्रद्धान, भेदविज्ञान और आत्मानुभूति का मार्ग अपनाना होगा। वस्तुस्वातन्त्र्य के सिद्धान्त को समझना होगा, तभी हम नरकगति के दु:खों से बच सकते हैं।

पंचम सर्ग में मध्यलोक (तिर्यक लोक) का वर्णन है, इसकी लम्बाई सुमेरु पर्वत की लम्बाई (ऊँचाई) से मापी गई है। मेरुपर्वत ऊँचाई में एक लाख योजन विस्तारवाला है। इसमें 1 हजार योजन तो पृथ्वीतल के नीचे है और 99 हजार योजन ऊपर है। इसी मध्यलोक में असंख्यात द्वीपसमुद्रों से वेष्टित गोल जम्बूद्वीप है। सुमेरु पर्वत जम्बूद्वीप की नाभि के समान मध्य में स्थित है। जम्बूद्वीप की परिधि 3 लाख 16 हजार 200 योजन से कुछ अधिक है। इसमें सात क्षेत्र एवं कुलाचल (पर्वत) हैं। इन सबका विस्तृत वर्णन 733 श्लोकों में इसी सर्ग में किया है।

छटवें सर्ग में मध्यलोक के अन्तर्गत ही सुमेरु पर्वत की परिक्रमा करने वाले सूर्य, चन्द्र, तारा मण्डल आदि ज्योतिषी देवों का वर्णन है।

पृथ्वीतल से सात सौ नब्बे योजन ऊपर से लेकर नौ सौ योजन आकाश की ऊँचाई में सबसे नीचे तारा स्थित हैं और पृथ्वी से ही नौ सौ योजन की ऊँचाई पर सबसे ऊपर ज्योतिष्क पटल है। इसतरह यह ज्योतिषट पटल एक सौ दस योजन मोटा है तथा आकाश में घनोदधि वातवलयपर्यन्त सब ओर फैला है। ताराओं के पटल से दस योजन ऊपर सूर्यों का पटल है और उससे अस्सी योजन ऊपर चन्द्रपटल है। उससे चार योजन ऊपर नक्षत्रपटल है, उससे भी चार योजन ऊपर चलकर शुक्र, गुरु, मंगल और शनीश्चर ग्रहों के पटल हैं।

सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्र, ग्रह और तारा – ये पाँच प्रकार के ज्योतिर्विमान हैं। इनमें रहनेवाले देव भी इन्हीं के समान नामवाले हैं। छटवें सर्ग के प्रारंभ के सात श्लोकों में उपर्युक्त जानकारी के बाद इसी सर्ग के 33 श्लोकों तक इनके विमानों की संख्या, माप, रचना आदि का वर्णन है।

छटवें सर्ग के 35 वें श्लोक से मेरुपर्वत की चूलिका से ऊपर अर्द्धलोक प्रारंभ होता है। ऊपर–ऊपर दक्षिण और उत्तर के रूप में दो–दो के युगल में सोलह स्वर्ग हैं, इन्हें कल्प कहते हैं तथा इनमें रहनेवाले इन्द्र–इन्द्राणियाँ एवं देव–देवियाँ कल्पवासी कहलाते हैं। इनके ऊपर अधोग्रैवेयक, मध्यग्रैवेयक एवं अर्द्धग्रैवेयक के भेद से तीन प्रकार के नौ ग्रैवेयक हैं। इनके आगे नौ अनुदिश और उनके ऊपर पाँच अनुत्तर विमान हैं। अनुदिश व अनुत्तर विमानों का एक–एक पटल है। अन्त में ईषतप्राग्भार भूमि है। इसी के अन्ततक अर्द्धलोक है। स्वर्गों के समस्त विमान 84 लाख 96 हजार 23 हैं। इसतरह उस सर्ग में 41 श्लोकों में यह सामान्य जानकारी देकर 88 श्लोकों तक इन्हीं स्वर्गों का विशेष विवेचन है। तत्पश्चात् प्राग्भारभूमि (सिद्धशिला), ढाईद्वीप, प्रथम स्वर्ग का ऋतुविमान, प्रथम नरक का सीमान्तक इन्द्रकबिल और सिद्धालय – ये पाँच विस्तार की अपेक्षा समान हैं अर्थात् ये सब 45 लाख योजन विस्तारवाले हैं।

छटवें सर्ग के 89 वें श्लोक से 102 तक स्वर्ग के विमानों की सूक्ष्म चर्चा है, तत्पश्चात् 103 से 107 तक किन भावों से कौन सा स्वर्ग प्राप्त होता है – यह जानकारी दी है जो इसप्रकार है –

पंचाग्नि आदि तप तपने वालों अन्य मतावलम्बी साधुओं की उत्पत्ति अपने–अपने शुभभावों के अनुसार भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिषी देवों में होती है। परिव्राजक सन्यासियों की उत्पत्ति ब्रह्मलोक तक और सम्यग्दृष्टि आजीवकों की उत्पत्ति सहस्रार स्वर्ग तक हो सकती है। अन्य मतावलम्बी सहस्रार के आगे नहीं जाते। श्रावक सौधर्म स्वर्ग से लेकर अच्युत स्वर्ग तक जाते हैं और नग्न दिगम्बर मुनि उससे आगे भी जा सकते हैं। इसके आगे सर्वार्थसिद्धि तक रत्नत्रय के धारक तपस्वी भव्यजीव ही आते हैं।

इसके आगे 108 श्लोक से 125 तक स्वर्गों की ही सूक्ष्म चर्चा है। तत्पश्चात् 129 से 140 तक सिद्धशिला की एवं उसे प्राप्त करनेवाले पवित्र आत्माओं की चर्चा है।

यह ईषत् प्राग्भार नाम की आठवीं पृथ्वी है। यह मध्य में आठ योजन मोटी है। उसके आगे दोनों ओर क्रम–क्रम से कम–कम होती हुई अन्त भाग में अंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण अत्यन्त सूक्ष्म रह जाती है। यह पैंतालीस लाख योजन विस्तारवाली है। '' **(क्रमश:)**

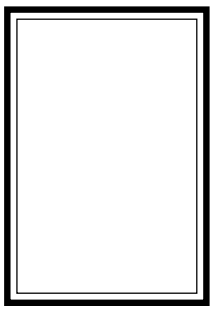

कहान सन्देश

(गतांक से आगे,)

पधारिये .. !

!! श्री म

ऐतिहासिक धर्ममयी सम्राट हर्षवर्धन की प्राचीन राजधानी, भगवान

सुगन्ध नगरी कन्नौज (उ.प्र.) में भगवान महावीर के

श्री 1008 ऋषभदेव जिनबिम्ब पंचकल्याणक

(शुक्रवार, दिनांक 10 मई 200

कार्यक्रम स्थल : जैननगर (छिप

अत्यन्त आनन्द एवं उल्लास के साथ सूचित करते हैं कि धर्मपरायण कन्नौज नगरी में परमपूज्य आचार्य से एक सहस्र वर्ष प्राचीन जिनमंदिर (भगवान सुमतिनाथ जिनालय) के जीर्णोद्धार के उपरान्त नवनिर्मित म एवं भगवान बाहुबली प्रतिमा की प्राणप्रतिष्ठा – पंचकल्याणक महोत्सव होने जा रहा है।

आपसे अनुरोध है कि दिगम्बर जैनधर्म के इस लोकोत्तर महायज्ञ में निज कल्याणार्थ सपरिवार तथा इ

पावन सान्निध्य

परमपूज्य आचार्य शिरोमणी 108
श्री विद्यासागरजी महाराज के
विद्वान, योग्यशिष्य
पूज्य 108 मुनि समतासागरजी महाराज
पूज्य 108 मुनि प्रमाणसागरजी महाराज
पूज्य 105 ऐलक निश्चयसागरजी महाराज

प्रतिष्ठ
पण्डित मोतीलाल
ऋषभदेव
सह-प्रति
पण्डित सुधीरकुम
ऋषभदेव

विशेष : (1) परमपूज्य मुनिराजों के प्रवचनों का अमृतपान नित्यप्रतिदिन प्राप्त होगा।

(2) जन्माभिषेक एवं मस्तकाभिषेक हेतु कलशों का आवंटन शीघ्र करा लें।

(3) ठहरने एवं भोजन की समुचित नि:शुल्क व्यवस्था है।

परम संरक्षक	अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	महामंत्री	सह-महा
सवाईलाल जैन	पुष्पराज जैन (पम्पी)	अशोकचन्द्र जैन(एड.)	कस्तूरचन्द्र जैन	सुनीलकुम
दूरभाष : 34317, 35317	दूरभाष : 34614, 34114	दूरभाष : 35039	दूरभाष : 35041	दूरभाष : 3

विनीत : श्री 1008 ऋषभदेव जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, कन्नौ

निवेदक : सकल दिगम्बर जैनसमाज, श्री दिगम्बर जैन सभा कन्नौज (उ.प्र.) फोन –

नोट – कृपया इस विज्ञापन को जहाँ से स

महावीराय नम: !! अपूर्व धर्मलाभ लीजिये !!!

पार्श्वनाथ की दीक्षावनस्थली भागीरथी गंगा नदी के तट पर सुशोभित

के 2600 वें जन्मोत्सव वर्ष के समापन पर आयोजित

क प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्वशान्ति महायज्ञ

02 से बुधवार, 15 मई 2002 तक)

ट्टी), पो. कन्नौज-209725 (उ.प्र.)

र्य शिरोमणी विद्यासागरजी महाराज के शुभ आशीष व पूज्य आचार्य गुरुवर पुष्पदन्तसागरजी की सद्प्रेरणा

मानस्तम्भ, चौबीसी चरण पादुका मंदिर, भगवान पद्मप्रभ की विशाल भव्य अष्ट धातु की पद्मासन प्रतिमा

इष्ट मित्रों सहित पधारकर एवं धर्मलाभ लेकर लोकातीत जीवन का निर्माण करें।

ाचार्य

लजी जैन मार्तण्ड

व (राज.)

तिष्ठाचार्य

ारजी जैन मार्तण्ड

व (राज.)

मांगलिक कार्यक्रम

10 मई 2002	– घटयात्रा, ध्वजारोहण, पण्डाल शुद्धि, गर्भकल्याणक के 6 माह पूर्व की क्रियायें।
11 मई 2002	– **गर्भकल्याणक** की क्रियायें एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।
12 मई 2002	– **जन्मकल्याणक**, ऐरावत हाथी पर शोभायात्रा जन्माभिषेक आदि एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।
13 मई 2002	– **तपकल्याणक** की क्रियायें एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।
14 मई 2002	– **ज्ञानकल्याणक** की क्रियायें एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।
15 मई 2002	– **मोक्षकल्याणक,** श्रीजी विराजमान, महामस्तकाभिषेक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम।

मंत्री	**कोषाध्यक्ष**	**स्वागताध्यक्ष**
र जैन	सुशीलकुमार जैन	सुभाषचन्द्र जैन
4436	दूरभाष : 34941	दूरभाष : 34587

ौज, 209729 (उ.प्र.)

05694-37437, 34006, फैक्स नं. - 34617

ब देख सकें, ऐसे सार्वजनिक स्थान पर लगा देवें।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 45

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

निष्कर्ष यह है कि ज्ञानावरणादि जो सात कर्म हैं, वे आगामी कर्मास्रव एवं कर्मबंध के लिए अकार्यकारी हैं। इन सात कर्मों का उदय आए, इनका फल मिला तो ये चाहे भोगकर खिरें, चाहे बिना भोगे खिरें; लेकिन इनसे परम्परा आगे नहीं बढ़ती है, इनसे आगे द्रव्यकर्म से भावकर्म का दुष्चक्र नहीं चलता है।

जिसप्रकार एक पिता के पाँच पुत्र होते हैं; उनके आगे पुत्र के पुत्र होते हैं; इसप्रकार परम्परा चलती है। कभी–कभी दो पुत्र शादी नहीं करते हैं, दो पुत्रों को पुत्रियाँ ही होती है एवं एक पुत्र को पुत्र होता है। इसप्रकार यहाँ मात्र एक पुत्र से ही कुल परम्परा आगे बढ़ती है; बाकी चार पुत्रों से कुल परम्परा आगे नहीं बढ़ती है।

इसी भाँति सात कर्म एक पीढ़ी से आगे चलते ही नहीं हैं। नामकर्म के कारण शरीर का संयोग होता है, पर इस शरीर के कारण आगामी कर्मबंध नहीं होता है, यह कर्म उदय में आकर संयोग देकर नाश को प्राप्त हो जाता है। उसका अनंतकाल के लिए नाश हो जाता है; लेकिन यदि हम शरीर से राग करेंगे तो कर्मबंध होगा; क्योंकि राग तो मोहनीय कर्म के उदय से होनेवाला भाव है। मोहनीय कर्म के उदय से जो मोह–राग–द्वेष भाव होते हैं, वे आगामी कर्मबंध के कारण हैं। मोहनीय कर्म से ही द्रव्यकर्म से भावकर्म की परम्परा आगे बढ़ती है। इसप्रकार द्रव्यकर्म में सात द्रव्यकर्मों के वंश का नाश तो होनेवाला ही है।

उन सात प्रकार के द्रव्यकर्मों में कुछ द्रव्यकर्मों का फल ऐसा होता है, जिन्हें भोगना ही पड़ता है एवं कुछ ऐसे होते हैं, जिन्हें नहीं भोगे तो भी चलता है; ऐसी अवस्था में वे बिना भोगे स्वयमेव खिर जाते हैं। इसप्रकार इन सात कर्मों के फल में भोग्य, अभोग्य – ऐसी दोनों स्थितियाँ पायी जाती हैं। चक्रवर्ती, तीर्थंकरों के कुछ कर्मफल ऐसे होते हैं, जिन्हें भोगना ही पड़ता है। नरकगति बाँध ली है तो उसे भोगना ही पड़ता है। वे बिना भोगे कटते ही नहीं है।

इसप्रकार कर्म में जो सात प्रकार के द्रव्यकर्म हैं; इनकी संतति नहीं चलती है। सुस्वर नामकर्म से अच्छा गला एवं दुःस्वर नामकर्म से बुरा गला मिला, यहीं तक नामकर्म की संतति है, इसके आगे अच्छे गले से पुण्य और बुरे गले से पाप नहीं बंधता है। जो कर्म संयोग में ही फलते हैं, वे कर्म संयोग देने के पश्चात् नाश को प्राप्त हो जाते हैं; इसप्रकार कितने ही द्रव्यकर्म व्यर्थ में ही खिर जाते हैं।

आठ कर्मों में मात्र मोहनीय कर्म की ही संतति चलती है। मोहनीयकर्म के भी दो भेद हैं, एक दर्शन मोहनीय एवं दूसरा चारित्रमोहनीय।

करणानुयोग की अपेक्षा से चारित्रमोहनीय के उदय में होनेवाले भावों से जो बंध होता है, उस बंध को अध्यात्म में बंध गिनते ही नहीं हैं; क्योंकि वह बंध अनंत संसार का कारण नहीं है। दर्शनमोहनीय के उदय से होनेवाले आस्रव और बंध की अपेक्षा यह आस्रव–बंध अनंतवाँ भाग है। इसी आधार पर सम्यग्दृष्टि को निरास्रव कहा गया है।

सम्यग्दृष्टि के आस्रव विद्यमान हैं। चारित्रमोहनीय कर्म के उदय से जो अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण, संज्वलन–संबंधी राग विद्यमान है; उससे जो 77 प्रकृतियाँ बंधती हैं; तत्संबंधी आस्रव हैं। लेकिन आस्रवाधिकार में आचार्य सम्यग्दृष्टि को निरास्रव कहते हैं। इसका आधार यह है कि चारित्रमोह के उदय में जो राग–द्वेष परिणाम होते हैं और उनसे जो आस्रव है, बंध है; उसे अध्यात्म आस्रव–बंध गिनता ही नहीं है।

अकेला मिथ्यात्व ही वास्तविक आस्रव है, वही भावास्रव है एवं उसके उदय से जो कर्म आते हैं, वे द्रव्यास्रव हैं। चारित्रमोह के उदय से ज्ञानी को जो बंध होगा, वह शुभराग हो तो चक्रवर्ती, तीर्थंकर पद बंधेगा; इस भाँति ये संयोग में फलनेवाले हैं। चारित्रमोहनीय कर्म के उदय से जो बंध होगा; वह अधिकांशतः संयोग में फलनेवाले हैं; लेकिन मिथ्यात्व से जो बंध होता है, वह संयोग में फलनेवाला नहीं है; उससे परद्रव्य में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्त्व एवं भोक्तृत्त्वबुद्धि होती है; वह आत्मा में फलनेवाला है; इसलिए चारित्रमोहनीय से होनेवाला कर्मास्रव एवं कर्मबंध अनंत संसार का कारण नहीं है।

इस पर शिष्य के हृदय में यह शंका होती है कि सम्यग्दृष्टि धर्मात्माओं को भोगों को भोगते हुए, खाते–पीते देखा है, तो क्या ऐसी स्थिति में उनके बंध नहीं होता है ?

इस प्रश्न को पंडित बनारसीदासजी इस छन्द के माध्यम से और अधिक स्पष्ट करते हैं –

(सवैया तेईसा)

ज्यौं जग मैं विचरैं मतिमंद, सुछंद सदा वरतै बुध तैसो।
चंचल चित्त असंजत वैन, सरीर–सनेह जथावत जैसो।।
भोग संजोग परिग्रह संग्रह, मोह विलास करै जहं ऐसो।
पूछत सिष्य आचाराज सौं यह, सम्यकवंत निरास्रव कैसो।।

जिसप्रकार मंदमती मिथ्यादृष्टि स्वच्छन्दता से विचरण करता है; उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि भी विचरण करता है। जिसप्रकार अज्ञानी का चित्त चंचल होता है, वाणी असंयत होती है, शरीर के प्रति प्रेम होता है, भोगों का संयोग होता है, परिग्रह का संग्रह होता है और मोह का विलास होता है; उसीप्रकार ज्ञानी के भी देखा जाता है। शिष्य आचार्यश्री से पूछता है कि ऐसी स्थिति में आप सम्यग्दृष्टि को निरास्रव कैसे कहते हो ? (क्रमशः)

महावीर जयन्ती के अवसर पर

देखना न भूलें

भगवान महावीर की आज के समय में उपयोगिता

इस विषय पर

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल

के इन्टरव्यू का प्रसारण

ए. टी. एन. वर्ल्ड चैनल पर

22 अप्रैल को प्रात: 7.00 बजे से 7.30 बजे तक तथा
सायं 8.30 बजे से 9.00 बजे तक

25 अप्रैल को सायं 8.30 बजे से 9.00 बजे तक

नोट : 1. कृपया इसे पढ़कर मंदिर में या सार्वजनिक स्थान पर लगा देवें। अधिक स्थानों पर लगाना हो तो फोटोकॉपी कराके लगा दें।

2. यदि आपके यहाँ ए.टी.एन. चैनल नहीं आता हो पर यदि आप इस इन्टरव्यू को लोकल चैनल पर देना चाहते हो तो कृपया फोन नं. 515581, 515458, फैक्स नं. (0141)704127 तथा निम्नानुसार ई-मेल ptstjaipur@yahoo.com से संपर्क करें; ताकि हम आपको इसकी वीडियो कैसेट भेज सकें।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वैराग्य समाचार

1. श्री पद्मकुमार मनोहर जोगी रिसोड का निधन हो गया है। आपका जीवन अत्यन्त सात्विक एवं धार्मिक था। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 101 रुपये प्राप्त हुये, एतदर्थ धन्यवाद।

2. श्रीमती चम्पाबाई वर्धमान मुलावकर सुल्तानपुर का णमोकार मंत्र के स्मरणपूर्वक देहावसान हो गया है। आप अत्यन्त धार्मिक एवं तत्त्वजिज्ञासु महिला थीं। आपने लगभग 25 वर्षों तक श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्य आश्रम एलोरा (महा.) को अपनी सेवायें प्रदान कीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 101 रुपये प्राप्त हुये, एतदर्थ धन्यवाद।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों – यही मंगल कामना है।

हार्दिक बधाई

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के भूतपूर्व एवं श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) के वर्तमान छात्र श्री अशोककुमारजी जैन ने आचार्य कुन्दकुन्द के साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन विषय पर विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) की शोध–उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने अपना शोध कार्य डॉ. सुदीप जैन के मार्गदर्शन में पूरा किया है।

उन्हें इस गौरवमयी उपलब्धि के लिए महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनायें।

आगामी कार्यक्रम –

सिद्धचक्र विधान का भव्य आयोजन

महाकौशल क्षेत्र की संस्कारधानी जबलपुर नगरी में स्थित श्री दिगम्बर जैन महावीरस्वामी मंदिर घमण्डी चौक में दिनांक 23 से 30 अप्रैल 2002 तक श्री बाबूलालजी जैन रूपाली परिवार द्वारा श्री सिद्धचक्र मंडल विधान का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री जयपुर के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिलेगा। विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर द्वारा सम्पन्न कराये जायेंगे। साधर्मी बंधुओं से इस मांगलिक अवसर पर पधारने हेतु विनम्र निवेदन है।

– अशोक जैन, दिगम्बर एजेन्सी

कृपया अवश्य नोट करें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का नया फैक्स नं. निम्नप्रकार है –
(0141) 704127

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

खतौली	– 19 से 21 अप्रैल 2002	शिविर
दिल्ली (सरोजनीनगर)	– 22 से 25 अप्रैल	पंचकल्याणक/महावीरजयन्ती
दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट)	– 5 मई 2002	श्री कानजीस्वामी जयन्ती
देवलाली	– 10 मई से 27 मई 2002	गुरुदेव जयन्ती व प्रशिक्षण शिविर
विदेश भ्रमण	– 30 मई से 29 जुलाई 2002	धर्मप्रचार

तीर्थधाम मङ्गलायतन के जिनमन्दिरों का वेदी शिलान्यास महोत्सव

उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ जिले (अब हाथरस) के सासनी कस्बे में देश के प्रथम सुनियोजित तीर्थधाम मङ्गलायतन के चारों जिनायतनों का तीन दिवसीय वेदी शिलान्यास महोत्सव मंगलवार, 2 जुलाई से गुरुवार, 4 जुलाई 2002 की पावन तिथियों को होना सुनिश्चित हुआ है।

इस अवसर पर आपको मङ्गलायतन की निर्माण प्रगति के साक्षी होने के साथ–साथ धार्मिक विधान, शिक्षण शिविर, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि का भी अहर्निश लाभ प्राप्त होगा।

सभी साधर्मी बन्धुओं को इस मंगल महोत्सव में सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारने का हमारा भाव–भीना आमंत्रण है।

अष्टान्हिका पर्व सानन्द सम्पन्न

द्रोणगिरि (छतरपुर) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द–कहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा 'सिद्धायतन' में श्री 47 शक्ति विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. पण्डित जितेन्द्रकुमारजी चंकेश्वरा सोलापुर, श्री पण्डित राजकुमारजी आनन्दकर सोलापुर एवं पण्डित मन्नूलालजी वकील सागर के सारगर्भित प्रवचन हुए। ध्वजारोहण श्री पूरणचंद्रजी बुखारिया टीकमगढ़ ने किया।

अब विदेशों में भी सत्साहित्य उपलब्ध है

अब विदेशों में भी पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित सत्साहित्य उपलब्ध हो गया है। यू.एस.ए. में जो भी भाई–बहिन सत्साहित्य लेना चाहते हैं वे निम्न पते पर सम्पर्क करके सत्साहित्य प्राप्त कर सकते हैं।

Pandit Todarmal Smarak Trust
C/o - Niranjan shah 804 Seers Drive
Chicago, IL 60173-6195
Phone # (847) 330-1088.
Fax # (847) 466-2177

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **अप्रैल (द्वितीय) 2002**
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए–4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए– 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर